मनोज
चित्र
कथा
293 मूल्य 4.00
राम - रहीम
और
फोमांचू दी ग्रेट
मनोज
कॉमिक्स

लेकिन हमारे प्यारे अदृश्य चचा, आखिर तुम हो कौन और हमसे क्या चाहते हो?

मेरे बारे में जानोगे तो बिस्तर से उछल पड़ोगे भतीजे! खैर, अभी तुम्हें अपने बारे में बता देता हूं...

मैं फिंचलैंड का बेताज बादशाह हूं। मेरे देश का विज्ञान तुम्हारे व अन्य देशों के विज्ञान से सैकडो वर्ष आगे है..
???
... मेरे देश में पूर्ण सुख-शांति और अमन है। वहां किसी चीज का कोई अभाव नहीं है...
!!!
...लेकिन मुझे न जाने क्यों खतरों से खेलने का शौक है। इसीलिए जान-बूझकर बडे-बडे अपराध करना मेरी हाबी बन चुकी है...
...अब यह दूसरी बात है कि मैं अपराध धन के लिए नहीं, बल्कि अपने मनोरंजन के लिए करता हूं।
ओह!

और हां, तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं अपराध करते हुए भी अन्य अपराध करने वालों का जानी दुश्मन हूं। धन व इज्जत लूटने वाले अपराधियों से मुझे सख्त नफरत रहती है...

???

...और जो लोग अपने देश से गद्दारी करते हैं, वे तो मुझे एक आंख नहीं सुहाते, जबकि देश भक्तों व बहादुरों से मुझे बेहद प्यार रहता है।

वाह! तब तो आप हमारे कमाल के चचा हैं।

हा-हा-हा! अब यह तो वक्त ही बतायेगा?

चचा, अब क्या आप यह बताने का कष्ट करेंगे कि इतनी रात गये आप हमारे घर क्यों आये हैं और हमसे क्या चाहते हैं?

फिलहाल तो मैं तुम दोनों की बहादुरी की परीक्षा लेने के लिए तुम्हें यह चैलेंज करने आया हूं कि मैं जल्दी ही तुम्हारे देश के महान् वैज्ञानिक प्रोफेसर भास्कर का अपहरण कर अपने फिंचलैण्ड ले जाऊंगा।

नही मिस्टर फीमांचू! तुम ऐसा हरगिज नहीं कर सकते। तुम्हारी यह मंशा तुम्हें बहुत महंगी पड़ेगी।

हा-हा-हा! यही तो मैं चाहता हूं कि तुम मेरे काम में पूरी-पूरी रुकावट डालने की कोशिश करो, ताकि तुम्हारी बुद्धिमानी व बहादुरी की अग्नि परीक्षा में अपनी आंखों से देख सकूं।

यह अग्नि-परीक्षा भी हम दे देंगे हमारे प्यारे अज्ञात चचा, लेकिन क्या आप एक बार हमें अपने दीदार नहीं करायेंगे। कम-से-कम हम भी तो देखें कि हमारे चचा देखने-भालने में कैसे लगते हैं?

काफी चालाक मालूम पड़ते हो। खैर, मैं अपने भतीजों की इच्छा अवश्य पूरी करूंगा।

आवाज समाप्त होते ही...

अगले ही पल—
हा-हा-हा! लो मेरे भतीजो, अच्छी तरह मेरे दीदार कर लो
आंय! यह तो कलियुग का भगवान जान पड़ता है।
विलक्षण है इस इंसान का व्यक्तित्व। काना होते हुए भी कितना तेज है इसके चेहरे पर...
...और इसके हाथ में सुदर्शन चक्र जैसी यह क्या चीज हो सकती है?
अरे, इस तरह मुझे टुकुर-टुकुर क्या देखे जा रहे हो भतीजो? क्या मैं तुम्हें आम इंसानों से हटकर कुछ और दिखाई दे रहा हूं।
ऐसी कोई बात नहीं है चचा! दरअसल, हम सोच रहे थे कि तुम यह सुदर्शन चक्र धारण करके क्या अपने-आपको ईश्वर साबित करने की कोशिश कर रहे हो।

मैं साबित नहीं कर रहा भतीजे, बल्कि मेरे देशवासी मुझे वास्तव में कलियुग का भगवान मानते हैं। और एक दिन पूरी दुनिया भी ऐसा ही मानेगी।
लगता है चचा, तुम बकवास करने में ज्यादा विश्वास रखते हो, या फिर अफीम खाने के आदी हो।
रहीम का व्यंग्य सुनकर एक पल के लिए फोमांचू की इकलौती आंख बल्ब के समान जली-बुझी।
मुझे बदतमीजी बिल्कुल भी पसंद नहीं है भतीजे। आइंदा बात करते समय इस बात का ध्यान रखना।
रहीम इसे बातों में उलझाये हुए है। अतः इसे गिरफ्त में लेने का अच्छा मौका है।
भतीजे, मेरी जिस बात को तुम बकवास समझते हो, वह बकवास नहीं, बल्कि हकीकत है...
???

...यह चक्र भगवान् श्रीकृष्ण या भगवान् विष्णु के ही सुदर्शन चक्र का रूप है और यह वैसा ही कार्य करता है, जैसा सुदर्शन चक्र करता था...
...इसमें वैसी ही मारक शक्ति है, जैसी सुदर्शन चक्र में थी। वक्त आने पर मैं तुम्हें अपने चक्र का भी चमत्कार दिखाऊंगा...
...फिलहाल मैं जा रहा हूं, लेकिन तुम्हें चैलेंज देकर जा रहा हूं कि तुम यदि मुझे प्रोफेसर भास्कर का अपहरण करने से रोक सकते हो तो रोककर दिखाओ। अच्छा, विदा।
लेकिन जैसे ही फोमांचू जाने के लिए मुड़ा–
ठहरो चचा! इतनी जल्दी भी क्या है जाने की। जरा दो बातें मुझसे भी इस रिवॉल्वर के साये में करते जाओ।
वाह! यह हुई न बात।
ओह!

राम की इस अप्रत्याशित हरकत पर फोमांचू पलभर के लिए चौंका। लेकिन फिर उसके भयावने अट्टहास से पूरा कमरा गरज उठा।

हा-हा-हा!

अरे मेरे नादान भतीजे! इस खिलौने से मुझे डराना या रोकना बेकार है। मेरे देश में इन जैसे खिलौनों से दूध पीते बच्चे खेलते हैं।

सुनो मिस्टर फोमांचू! मैं तुम्हें पकड़कर यह सबक सिखाने की कोशिश करूंगा कि हिन्दुस्तान में अपराध करने के विषय में सोचना भी अपराध माना जाता है।
समझ गया! तुम चाहते हो कि मैं प्रोफेसर भास्कर तक पहुंच ही न पाऊं।
तुम बिल्कुल ठीक समझे मिस्टर फोमांचू!
तो ठीक है! तुम मुझे पकड़ना चाहते हो तो पकड़ लो। मैं तो चला। हा-हा-हा!
नहीं, मैं तुम्हें इतनी आसानी से नहीं जाने दूंगा।

धांय-धांय-धांय
हा-हा-हा!
ओह! इस पर तो गोलियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कहीं इसने साधारण कपड़ों के नीचे बुलेट प्रूफ पोशाक तो नहीं पहनी हुई है। जरूर यही बात होगी।
चचा! लगता है, तुम बुलेट प्रूफ पोशाक में यहां आये हो।
तुम्हारा कहना काफी हद तक ठीक है बच्चे। लेकिन मैं तुम्हारी और ज्यादा जानकारी के लिए बता दूं कि मेरे इन वस्त्रों के नीचे जो पोशाक है, वह मेरी रक्षा केवल गोलियों से ही नहीं, बल्कि हर प्रकार के हथियारों व अग्नि से भी करती है...
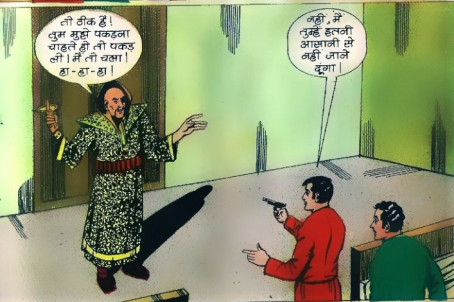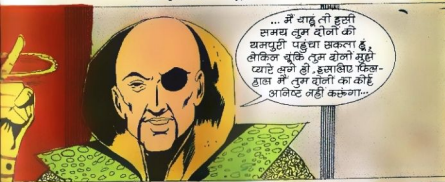
... मैं चाहूं तो इसी समय तुम दोनों को यमपुरी पहुंचा सकता हूं, लेकिन चूंकि तुम दोनों मुझे प्यारे लगे हो, इसलिए फिलहाल मैं तुम दोनों का कोई अनिष्ट नहीं करूंगा...
... अच्छा, अब मैं तुम दोनों की नींद और खराब नहीं करना चाहता। अतः जा रहा हूं। मुझे विश्वास है, तुम दोनों से मेरी मुलाकात जल्दी ही होगी। विदा!
अरे चचा! जरा जाने से पहले हमसे हाथ तो मिलाते जाओ!
...किन रोशन खाका तुरन्त ही लोप हो गया।
चला गया कम्बख्त!
हां, लेकिन मुझे लगता है, यह काला व्यक्ति जल्दी ही हमारे देश में कोई भयानक तूफान लेकर पुनः प्रकट होगा।

तभी—
राम-रहीम बेटे, क्या हुआ ? यह गोलियों की आवाज कैसी थी ?
???
घबराने की कोई बात नहीं है आंटी! खिड़की के रास्ते एक चोर गलती से हमारे कमरे में घुस आया था। सो राम भइया ने उसे डराकर भगा दिया।
इस तरह राम-रहीम ने असली बात गोल कर राधादेवी को दिलासा देकर वापस भेज दि
राधादेवी के जाने के बाद—
रहीम! तुम स्वचालित कैमरे से रील निकाल लो। मुझे पूरा विश्वास है कि इस कमरे में घटने वाले तमाम वाक्यातों को उसने शूट कर लिया होगा।
अभी लो भइया।

म एक टेबल नीचे रखकर छत से
के एक गुप्त मूवी कैमरे को उतारने
ा।
???

फिर कैमरे से रील निकालने के बाद—
यह लो भइया!

राम ने अपने घर में बनी लैब में जाकर
दी-जल्दी फिल्म डेवलप की।
अब क्या विचार है राम भइया?
फिलहाल सोते हैं। कल हम सबसे पहले चीफ से मिलकर फोमांचू के बारे में विचार-विमर्श करेंगे। हो सकता है, उन्हें फोमांचू के बारे में कोई विशेष जानकारी हो।
ठीक है।

दोनों पुनः अपने-अपने बिस्तरों पर आ लेटे। लेकिन उनकी आंखों में नींद का नामोनिशान तक नहीं था, क्योंकि उनकी आंखों के सामने इस समय भी फोमांचू का भयानक चेहरा घूम रहा था।
हा-हा-हा!

दूसरे दिन नित्य क्रिया से निवृत्त होकर राम-रहीम चीफ मुखर्जी के निवास स्थान पर पहुंचे—

गुड मॉर्निंग चीफ अंकल!

मॉर्निंग! लेकिन आज तुम दोनों सुबह-सुबह कैसे? खैरियत तो है ना?

चीफ अंकल! खैरियत होती तो सुबह-सुबह आपको तकलीफ देने क्यों चले आते?

ओह! बैठो और आराम से सारी बात बताओ!

चीफ अंकल! कल रात हमारी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई, जो अपने आपको फिंचलैण्ड का राजा बताता है, लेकिन वह राजा होते हुए भी मनोरंजन के लिये अपराध करता है!

व्हाट? यह तुम क्या उलटी-सीधी बक रहे हो।

...कहीं तुमने रात कोई भयानक सपना तो नहीं देखा, जिसका असर शायद दिमाग पर अभी तक है।
राम भइया सच कह रहे हैं अंकल। उससे मैं भी मिला हूं। उसका नाम फोमांचू है।
फोमांचू।
हां अंकल।
फिर राम ने चीफ मुखर्जी को रात घटी घटना के बारे में सबकुछ बता दिया।
सबकुछ सुनकर—
नहीं, मैं तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं कर सकता। खास तौर पर इस बात पर कि उसके पास सुदर्शन चक्र भी था?
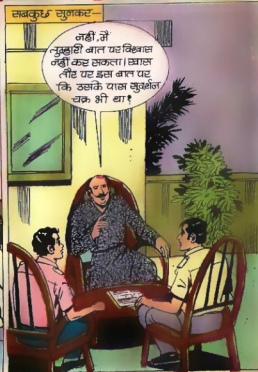
इस फिल्म को देखने के बाद आपको हमारी बात पर अपने आप विश्वास हो जायेगा। यह फिल्म हमारे कमरे की छत से सटके स्वचालित गुप्त कैमरे ने उतारी है।
ओह!
तुम दोनों मेरे साथ आओ। पहले मैं यह फिल्म ही देखूंगा।
ठीक है। चलिए।
रामसिंह, तीन कप कॉफी मेरे रीडिंगरूम में भिजवा देना।
जी साब!
रीडिंगरूम में पहुंचकर—
फिल्म मुझे दो?
चीफ मुखर्जी ने फिल्म लेकर प्रोजेक्टर पर चढ़ा दी और उसे चालू कर दिया। शीघ्र ही—
हा-हा-हा! उठो मेरे भतीजो
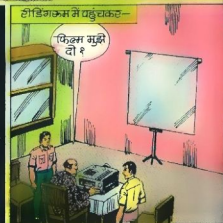
पहले आवाज गूंजती रही, फिर फोमांचू का रोशन खाका उभरा ...
... और जल्दी ही वह इंसानी खाका फोमांचू के शरीर में परिवर्तित हो गया।
हा-हा-हा! मैं फिंचलैण्ड का बादशाह फोमांचू हूं!
ओ नो!

बीच में रामसिंह कॉफी दे गया और तीनों कॉफी के घूंट भरते हुए फिल्म देखते रहे।
ठहरो, मैं तुम्हें इतनी आसानी से जाने नहीं दूंगा।
हा-हा-हा! इस खिलौने का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला। ऐसे खिलौनों से तो मेरे देश में दूध पीते बच्चे खेलते हैं।
कॉफी के खत्म होने के साथ ही फिल्म भी खत्म हो गई और चीफ मुखर्जी ने प्रोजेक्टर बंद कर दिया
तुम ठीक कहते थे राम! इस फिल्म को देखने से मुझे भी विश्वास हो गया है कि फोमांचू नाम का यह इंसान कोई साधारण इंसान नहीं है?

और यह भी तय है कि वह प्रोफेसर भास्कर का अपहरण करने की कोशिश अवश्य करेगा!
निश्चित रूप से करेगा। वरना वह व्यर्थ ही तुम्हें चैलेंज नहीं देता।
अंकल! क्या फोमांचू का कोई पुराना रिकॉर्ड आपके विभाग में या पुलिस विभाग में है...

हमारे विभाग में तो नहीं है। और जहां तक मुझे विश्वास है, पुलिस विभाग में भी नहीं होगा।

इसका मतलब यह हुआ कि फोमांचू हमारे देश में पहली बार अपराध करने जा रहा है।

फिलहाल तो यही सोचा जा सकता है। खैर, इस समय हमें फोमांचू के विषय में नहीं, बल्कि प्रोफेसर भास्कर के विषय में सोचना चाहिए।

यहां से जाकर हम उन्हीं से मिलेंगे चीफ अंकल...

...लेकिन आपको भी तुरन्त एक काम करना है। वह यह कि प्रोफेसर भास्कर के घर व प्रयोगशाला की गुप्त रूप से निगरानी। वह भी सादे वेश में...

...यहां तक की उनके घर में तमाम नौकर-चाकर भी गुप्तचर विभाग के हों।

ठीक है। यह प्रबन्ध मैं इसी समय कर दूंगा। और कुछ?

बस, फिलहाल इतना ही काफी रहेगा।

अच्छा, अब हमें आज्ञा दीजिए।

ठीक है। जाओ, लेकिन मुझसे ट्रांसमीटर या फोन द्वारा बराबर सम्बन्ध बनाये रखना।

चीफ से विदा और फिल्म लेकर राम-रहीम कोठी से बाहर निकले और अपनी मोटर-साइकिल पर सवार होकर प्रोफेसर भास्कर से मिलने चल दिये।

कुछ देर बाद राम-रहीम प्रोफेसर भास्कर के साथ उनके ड्राइंगरूम में बैठे थे।

हां भई, अब कहो। इतने दिनों बाद आज अचानक तुम्हें मेरी याद कैसे हो आई? वैसे इतना तो मैं तुम दोनों को देखकर ही समझ गया हूं कि तुम सिर्फ मेरा हाल-चाल पूछने नहीं आये होगे।

आप बिल्कुल ठीक समझे प्रोफेसर अंकल...

...दरअसल, हम आपको एक बहुत ही बड़े खतरे से आगाह व सावधान करने आये हैं।

क्या मतलब?

तब राम ने उन्हें सारी बात बता दी।

सबकुछ सुनकर प्रोफेसर भास्कर चौंक उठे—

क्या तुम सच कह रहे हो कि फोमांचू नाम के उस व्यक्ति के हाथ में सुदर्शन चक्र जैसा कोई अस्त्र था?

हम सौ प्रतिशत सच कह रहे हैं अंकल और इसका प्रमाण भी हमारे पास है। लेकिन आप चौंके क्यों? क्या आप फोमांचू से परिचित हैं?

मतलब बाद में बताऊंगा। पहले तुम अपनी बात का प्रमाण दो?
रहीम, फिल्म निकालो।
यह फिल्म हमारी बात की सच्चाई का प्रमाण है अंकल!
तब प्रोफेसर भास्कर उन्हें अपने विशेष कक्ष में ले गये और उस फिल्म को प्रोजेक्टर पर चलाकर उसे बड़े गौर के साथ देखा।
यह चक्र कोई साधारण नहीं, बल्कि ठीक भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण के चक्र के समान ही चमत्कारी और मारक है।
पूरी फिल्म देखने के बाद—
हे ईश्वर! कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा? क्या वास्तव में फोमांचू नाम के इस व्यक्ति ने सुदर्शन चक्र तैयार कर लिया है?
आप किन विचारों में डूब गये अंकल?
राम बेटे, यदि फोमांचू ने वास्तव में सुदर्शन चक्र तैयार कर लिया है तो वह पूरी पृथ्वी का विनाश कर सकता है।
यह ... यह आप क्या कह रहे हैं अंकल? एक साधारण से चक्र से वह भला ऐसा कैसे कर सकता है?
???

मैं ठीक कह रहा हूं मेरे बच्चो! तुम उस चक्र की शक्ति के विषय में नहीं जानते। लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि सुदर्शन चक्र तैयार करने का फार्मूला उसके पास कैसे आ गया?

अंकल! आप तो ऐसे कह रहे हैं, जैसे सुदर्शन चक्र के विषय में आप बहुत कुछ जानते हैं।

हां, और वह फार्मूला वर्षों से हमारी पुश्तैनी लाइब्रेरी में रखा था। मैंने उस फार्मूले को अच्छी तरह से देखा और पढ़ा था, लेकिन सुदर्शन चक्र का आविष्कार मैंने इसलिए करना उचित नहीं समझा था...

...क्योंकि मुझे भय था कि कहीं उसकी विनाशक शक्ति के विषय में जानकर कोई अपराध प्रकृति का व्यक्ति उसे हासिल करने की कोशिश न करने लगे।

ओह! तो क्या वह फार्मूला अब भी आपके पास है?

नहीं, आज से पांच वर्ष पहले वह रहस्यमय तरीके से मेरी पुश्तैनी लाइब्रेरी से गायब हो गया था...

...लेकिन लगता है, वह फार्मूला इसी फोमांचू ने चोरी किया होगा या किसी से चोरी करवाया होगा।
यह तो आपने बड़ी ही विचित्र बात बताई, अंकल! हम तो सोच भी नहीं सकते थे कि कोई इंसान भी भगवान का अस्त्र बनाने की विधि जानता होगा?
अंकल! क्या आप हमें सुदर्शन चक्र के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं?
मैं समझा नहीं? कैसी जानकारी चाहते हो तुम?
यही कि वह कैसे कार्य करता है? कैसे घूमता है? किस प्रकार उसे छोड़ा जाता है? यानी उसे कैसे हैंडिल किया जाता है?
अवश्य बताऊंगा। सुनो...

...तुमने फोमांचू के उस हाथ को ध्यान से देखा होगा, जिस पर चक्र घूम रहा था?
हां अंकल! उस हाथ में दस्ताना चढ़ा हुआ था तथा उसमें कुछ बटन जैसी चीजें भी लगी हुई थीं।
बस, समझ लो कि वे बटन ही उस चक्र को चलाने का काम करते हैं। और जो दस्ताना फोमांचू ने पहन रखा था, वह किसी कपड़े या चमड़े का नहीं, बल्कि एक बहुत दुर्लभ धातु का है...
...उस धातु में रबड़ जैसी लोच भी होती है, इसलिए हाथ को मन मुताबिक मोड़ा व हिलाया जा सकता है...
...अब सुनो, तुमने फोमांचू के गले में एक आयताकार लॉकेट भी पड़ा देखा होगा?
बिल्कुल देखा है अंकल, लेकिन उसका क्या रहस्य है?
वह लॉकेट साधारण लॉकेट नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली टी.वी. स्क्रीन है...

... और दस्ताने में लगे एक बटन से उसे चालू किया जा सकता है...
...जिस व्यक्ति या प्राणी पर चक्र प्रयोग करना हो, उस टी.वी. को ऑन कर देने से उस व्यक्ति का चेहरा उस टी.वी. पर आ जायेगा...
... और चक्र के छोड़े जाने के बाद जब तक उस व्यक्ति या प्राणी का चेहरा उस टी.वी. पर रहेगा, चक्कर उसका पीछा करता रहेगा और उसकी गरदन काटकर ही वापस लौटकर आयेगा...
... लेकिन हां, यदि वह व्यक्ति या प्राणी, जिस पर कि चक्र का प्रयोग किया गया हो, टी.वी. की रेंज से बाहर हो गया तो टी.वी. से उसका चेहरा ओझल हो जायेगा और चक्र उसका पीछा करना छोड़ वापस तरंगों द्वारा उसके दस्ताने वाले हाथ पर अपने आप आ जायेगा।
हे ईश्वर! हमें तो आपकी बातें बिल्कुल तिलिस्मी व जादुई कहानियों जैसी लग रही हैं।
यह हकीकत है मेरे बच्चो! इसीलिए तो मैं चिंतित हो उठा हूं...

...पता नहीं कोमांचू उस शक्ति को हासिल कर क्या करना चाहता है। और मेरा अपहरण क्यों करना चाहता है?
यह तो तय है कि वह आपका अपहरण आपकी वैज्ञानिक योग्यता का फायदा उठाने के लिए करना चाहता है...
...लेकिन आप चिन्ता न करें। हमने आपकी सुरक्षा की पूरी व्यवस्था कर दी है।
कहकर राम ने उन्हें अपनी योजना बता दी।
सच राम, तुम वास्तव में बहुत बुद्धिमान हो। मुझे गर्व है कि तुम जैसे लड़के भी हमारे देश में हैं, जो बड़े-बड़े दिग्गजों को ढेर करने की क्षमता रखते हैं।
धन्यवाद अंकल! अब हम चलते हैं। कोई विशेष बात हो तो हमें सूचित करना न भूलियेगा।
ठीक है।
और प्रोफेसर से विदा ले राम-रहीम कोठी से बाहर आ गये।
अब कहां चलने का विचार है राम भइया?
सीधे घर।

तुम्हारा क्या विचार है, राम भइया? क्या कोमांचू चैलेंज देकर सचमुच प्रोफेसर अंकल का अपहरण करने की कोशिश करेगा?
हां, प्रोफेसर अंकल ने जो कुछ हमें बताया है, उसके अनुसार तो वह ऐसी कोशिश जरूर कर सकता है...
...लेकिन मैंने भी एक ऐसी योजना बनाई है कि कोमांचू मुंह की खाकर रह जायेगा।
अच्छा! क्या है तुम्हारी वह योजना?
घर चलकर बताऊंगा।
तभी—
बचाओ SSS
???

राम भइया, उस कार में कोई लड़की मुसीबत में है। हमें उसकी मदद करनी चाहिए।
ठीक कहते हो। तुम सम्भलकर बैठो, मैं स्पीड तेज करने जा रहा हूं।
अगले ही पल राम की मोटर साइकिल ने तूफानी गति पकड़ ली।
अब वे बदमाश बचकर नहीं भाग सकते।
कार में—
उस्ताद! मोटरसाइकिल सवार वे दोनों छोकरे हमारा पीछा कर रहे हैं।
ओह! इस कम्बख्त कालिये ने इस लड़की का मुंह छोड़कर बेकार ही एक झंझट पीछे लगा लिया।
मैं क्या करता उस्ताद! इस कुतिया ने मेरे हाथ पर काट जो लिया था।

बंद कर अपनी बकवास। एक लड़की के काटे का दर्द, नहीं झेल सकता। लानत है तेरी मर्दानगी पर।
रॉकी, गाड़ी की रफ्तार धीमी कर। मैं उन छोकरों से इस वीराने में ही पीछा छुड़ा लेना चाहता हूं।
ओ.के. उस्ताद!
राम भइया, तुमने कुछ नोट किया। कार की रफ्तार कम हो रही है।
देख रहा हूं। शायद उनका इरादा नेक नहीं है। तुम अपना रिवॉल्वर निकाल लो।
रहीम ने अपना रिवॉल्वर निकाल लिया, लेकिन तभी—
धांय-धांय
फटाक

बर्स्ट होते ही मोटरसाइकिल बेकाबू हो गई।
ओफ्फ!
राम भइया, सम्भालो!
हा-हा-हा! गये साले काम से।
सच उस्ताद! तुम्हारा निशाना अचूक है।
लेकिन राम एक कुशल चालक था। इसलिए एक बड़ी दुर्घटना को घटने से बचा गया।
उफ! बाल-बाल बचे।
हां, लेकिन अफसोस कि वे कम्बख्त बच निकले।
बदमाश तो हाथ से निकल गये और अब उनका पीछा किया जाना भी सम्भव नहीं। फिर अब क्या करना चाहिए?
चलो, किसी निकटवर्ती पुलिस स्टेशन चलकर पुलिस को इस घटना की सूचना देते हैं।
हां, यही ठीक रहेगा। कमसे-कम पुलिस वायरलेस पर अन्य चौकियों को सतर्क कर उन्हें पकड़ने की कोशिश तोकर सकती है।

और दोनों मोटरसाइकिल सड़क के एक किनारे खड़ी कर निकटवर्ती पुलिस स्टेशन की ओर चल पड़े।

मुझे विश्वास है, उस कार में जो भी लड़की मदद के लिए चिल्लाई थी, उसका बलात् अपहरण किया गया है।

यार, तुम कभी-कभी बेवकूफों जैसी बातें करने लगते हो! यदि उसका अपहरण नहीं किया जाता तो वह चिल्लाती ही क्यों...

...हां, यह सोचने की बात है कि वह लड़की जवान है या नाबालिग, और उसका अपहरण धन के लिए किया गया है या फिर अपनी हवस पूरी करने के लिए।

बात जो भी हो, लेकिन हैं दोनों ही बात खतरनाक।

- क्या फोमांचू अपने चैलेंज को पूरा कर पाया?
- क्या वह प्रोफेसर भास्कर का अपहरण कर पाने में सफल हो सका?
- क्या फोमांचू वास्तव मे कलियुग का भगवान् था?
- क्या फोमांचू के फिंचलैण्ड का वास्तव में कोई अस्तित्व था?
- क्या फोमांचू हकीकत में बदमाशों का दुश्मन था?
- राम-रहीम किस प्रकार फोमांचू पर काबू पाने में सफल हो सके?
- बदमाशों द्वारा अपहृत की गई युवती का क्या हुआ?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए मनोज कॉमिक्स के आगामी सैट मे पढ़ें :-

"कलियुग का भगवान्"